

lR; opu

ikxke u- 327

: r & 3%1&11

: r 3%1 में हम पढ़ते हैं,

*“उसकी सास नाओमी ने उससे कहा, हे मेरी बेटी, क्या मैं
तेरे लिये ठाँव न ढूँढ़ूँ कि तेरा भला हो?”*

कटनी के सम्पूर्ण समय नाओमी रूत और बोअज़ को बैतलहम में एक साथ आते देखती रही है— लगभग छः सप्ताह हो गए हैं। अब जौ और गेहूँ एकत्र किया जा चुका है। नाओमी देख रही है कि रूत अपनी मर्यादा में है और बोअज़ पर दावा नहीं कर रही है और वह यह भी समझ गई है कि बोअज़ उससे प्रेम करने लगा है। अतः नाओमी रूत से पूछती है कि क्या वह उसके लिए ठाँव ढूँढ़े अर्थात् विवाह का प्रबन्ध करे। आपको स्मरण होगा कि नाओमी ने मोआब में ही अपनी बहुओं से कहा था कि वे पुनर्विवाह करके शान्ति पाएँ। अतः वह अब भी रूत के लिए चिन्तित है।

: r 3%2 में हम पढ़ते हैं,

*“अब जिसकी दासियों के पास तू थी, क्या वह बोअज़
हमारा कुटुम्बी नहीं है? वह तो आज रात को खलिहान में
जौ फटकेगा।”*

उसने रूत को बताया कि बोअज़ उसका कुटुम्बी छुड़ानेहारा है, अतः वह उस पर दावा कर सकती है। तब उसने रूत को समझाया कि उसे क्या करना है,

: r 3%3 में हम पढ़ते हैं,

*“तू स्नान कर तेल लगा, और अच्छे वस्त्र पहिनकर
खलिहान को जा; परन्तु जब तक वह पुरुष खा—पी न चुके
तब तक अपने को उस पर प्रगट न करना।”*

उसने रूत से कहा कि धार्मिक उत्सव समाप्त होने तक वह प्रतीक्षा करेगी। नाओमी ने रूत से कहा, “अब यह तेरे हाथ में है कि बोअज़ को कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनाए।” अब तक रूत इस विषय में कुछ नहीं कर रही थी, अतः नाओमी को उसे विशेष निर्देश देने पड़े। उसने उसे चार काम करने को कहे। मेरे विचार में यहाँ मसीह की शरण आनेवाले पापी का परिदृश्य है। ये चार चरण पापी के लिए आवश्यक हैं।

पहला : स्नान करना। यदि आप और मैं मसीह के पास आना चाहते हैं तो तीतुस अध्याय 3 पद 5 में लिखा है, “धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।” यही कारण है कि यूहन्ना 3:7 में प्रभु यीशु ने नीकुदेमुस से कहा था, “तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।” “तू निःसन्देह एक उत्तम धर्मी जन है परन्तु तुझे स्नान की आवश्यकता है – आत्मिक स्नान की। तुझे पुनः जन्म लेने की आवश्यकता है।” मेरे मित्रों, यदि आपको स्वर्ग के योग्य होना है तो आपको नये जन्म का अनुभव पाना आवश्यक है। किसी ने जॉन वेसली से पूछा कि वह सदैव “तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है” पर ही प्रचार क्यों करता है।” उसने कहा, “मैं आपको बताता हूँ। इस विषय पर मेरे प्रचार करने का कारण यह है कि आपको नया जन्म लेना आवश्यक है। मेरे मित्रों, न तो आप स्वर्ग जा सकते और न आप उद्धार पा सकते हैं यदि आप मसीह यीशु में नई सृष्टि नहीं बने हैं।” आप और मैं नया जन्म पाए बिना स्वर्ग के योग्य नहीं हैं। पवित्र आत्मा द्वारा नई सृष्टि बने बिना स्वर्ग नहीं जा सकते हैं।

अतः नाओमी ने रूत से कहा, “तू खेत में काम करती रही है इसलिए स्नान कर।” यह पहला काम था जो उसे करना था।

दूसरा काम जो नाओमी ने रूत को करने के लिए कहा, वह था, तेल लगा। मेरे विचार में पति के मरने के बाद रूत ने अपने रखरखाव पर ध्यान नहीं दिया था। अब क्योंकि नाओमी ने देखा कि रूत में कोई पुरुष रुचि ले रहा है तो उसने कहा कि वह मोआब में मध्यरात्री नाम का इत्र जो यों ही रखा है काम में ले। वह एक बाहर का इत्र था। अतः नाओमी ने कहा, उसे लगा।

यह हमारे मसीह व्यवहार का प्रतीक है। परमेश्वर की सन्तान बनने पर हम शिशु अवस्था में होते हैं और दिव्य सत्य को समझने के लिए विकसित भी हो जाते हैं। हमारा अभिषेक पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है। 1 यूहन्ना अध्याय 2 पद 20 में स्पष्ट है, “परन्तु तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो।” कहने का अर्थ यह है कि पवित्र

आत्मा ही है जो हमें सत्य का प्रकाशन प्रदान करता है और हम सबको पवित्र आत्मा की शिक्षा की आवश्यकता है। मेरे मित्रों, यही इस संसार में एकमात्र मार्ग है जिसके माध्यम से हम परमेश्वर के वचन को समझ सकते हैं। परमेश्वर का आत्मा ही हमें सिखाए। आज इसको अनदेखा किया जाता है। आज थियोलॉजी के क्षेत्र में वे आत्मा की प्रेरणा के विषय वाद-विवाद में लगे हैं। यह जानना कि बाइबल परमेश्वर का प्रेरित वचन है, अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आप धर्मशास्त्र की शाब्दिक, समग्र प्रेरणा में विश्वास रखते हुए भी परमेश्वर के वचन के अज्ञानी हो सकते हैं। क्यों? क्योंकि आप इस पुस्तक को मानवीय बुद्धि के आधार पर नहीं समझ पाएंगे। यदि आप इसके तथ्यों को समझें तो आप केवल कुछ बौद्धिक विषयों को ही अन्तर्ग्रहण कर पाएंगे। परन्तु आत्मिक बातें आपको केवल परमेश्वर का आत्मा ही समझा सकता है। 1 कुरिन्थियों अध्याय 2 पद 9-10 में पौलुस कहता है, "जो बातें आँख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।" परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।" परमेश्वर की आत्मा हमें सत्य का ज्ञान प्रदान करता है और सत्य के मार्ग पर लेकर भी चलता है। पवित्र आत्मा को हमारा शिक्षक बनाना कैसा महत्वपूर्ण है। "परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है।" हमें यह समझ लेना है कि नया जन्म पाने पर हमें पवित्र आत्मा का अभिषेक प्राप्त होता है। यही बात 1 यूहन्ना 2:27 में भी कही गई है, "परन्तु तुम्हारा वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है और झूठा नहीं; और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उस में बने रहते हो।" इसका अर्थ यह नहीं है कि आप मानवीय शिक्षक एवं शिक्षा का त्याग कर दें। आप और मैं, पूर्व समय के भक्तजनों की आत्मा प्रेरित शिक्षा के लाभ उठाने वाले हैं। परमेश्वर ही कलीसिया को शिक्षक प्रदान करता है परन्तु न तो पूर्व समय के शिक्षक और न ही शिक्षा का भण्डार आपको ज्योतिर्मय कर सकता यदि पवित्र आत्मा आपका शिक्षक न हो। अतः रूत का दूसरा चरण महत्वपूर्ण था। उसे पहले स्नान करना था फिर तेल से अभिषेक करना था।

अब तीसरा चरण था, अच्छे वस्त्र पहनना। मेरे विचार में नाओमी ने उससे कहा होगा, "रूत, तेरे पास वह जोड़ा है न जिसे पहनकर तू मेरे पुत्र के साथ बाहर जाया करती थी। तू

उसमें अति सुन्दर दिखाई देती है। यदि बोअज़ तेरे दीनहीन वस्त्रों में तुझसे प्रेम करने लगा है तो उस सुन्दर वस्त्र में तुझे देख उसका क्या हाल होगा? अतः आज इस वस्त्र को पहन ले।”

यह विश्वासी का तीसरा चरण है। हम मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण कर लेते हैं तो लिखा है कि वह हमारी धार्मिकता बन जाता है। वह हमारे पाप ही नहीं मिटाता, वह हमें नया जन्म देकर परमेश्वर की सन्तान ही नहीं बनाता। वह हमें अपनी धार्मिकता ही बना देता है जिसे धार्मिकता का वस्त्र कहा जाता है। रोमियों अध्याय 3 पद 22 में यह बहुत ही उत्तम रीति से कहा गया है, “परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिए है। क्योंकि कुछ भेद नहीं।” पौलुस इसे एक प्रकार का वस्त्र बताता है जो पापी पर गिरता है कि उसे ढाँक दे जिससे कि परमेश्वर हमें मसीह में देखता है और उसकी धार्मिकता हमारी धार्मिकता बन जाती है। हम उसमें सर्वांगीण खड़े दिखाई देते हैं। इफिसियों अध्याय 1 पद 6 में वह कहता है कि जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंट-मेंत दिया है। आज यही धार्मिकता का वस्त्र उसने हमें दिया है।

कई वर्ष पूर्व एक पुस्तक का प्रकाशन हुआ जिसका नाम “द रोब” था। मेरी कलीसिया की एक बुद्धिमान, ओजस्वी महिला एक रविवार संध्या मेरे पास आई और कहने लगी, “मैं एक पुस्तक पढ़ रही हूँ। वह एक रोमांचकारी पुस्तक है।” मैं ने पूछा कि वह क्या पुस्तक है। उसने कहा, “द रोब।” यह सुनकर मैं निरुत्साह हुआ। उसने पूछा कि क्या मैं ने वह पुस्तक पढ़ी है। “नहीं, मेरे पास यह पुस्तक है परन्तु मैं ने उसे विस्तार से नहीं पढ़ा है। सच तो यह है कि मैं ने उस पर ध्यान नहीं दिया।” उसने मुझे अचम्भे से देखा और बोली, “आपके कहने का अर्थ है कि आपको चिन्ता नहीं कि यीशु के बागे का क्या हुआ?” मैं ने कहा, “स्पष्ट कहूँ तो नहीं क्योंकि यीशु के उस जोड़रहित बागे का कोई रोमांचकारी इतिहास नहीं है। सैनिकों ने चिट्ठियाँ डाली कि देखें वह किसके नाम पर निकलता है और जिसके नाम वह निकला वह एक लम्बा चौड़ा रोमी सैनिक होगा। वह एक अर्ध कटिबन्धीय क्षेत्र है वहाँ मेरे विचार में बहुत गर्म होता है। उसने सम्भवतः कुछ सप्ताह बाद उसे पसीने से तर करके किसी कोने में फेंक दिया होगा और एक दासी ने आकर उसे उठाया होगा और नाक बन्द करके कूड़ेदान में डाल दिया होगा।” वह युवती मेरी बात सुनकर निश्चय ही विस्मृत थी। उसने कहा, “यह बड़ा भयानक विचार है! कहानी के अनुसार तो उस बागे का बड़ा रोमांचकारी इतिहास है।” मैं ने कहा, “उस बागे का इतिहास तो रोमांचक नहीं है परन्तु एक बागा ऐसा रोमांचक अवश्य है। यह बागा है, धार्मिकता का बागा जो मसीह उस पर विश्वास करने वाले पापी पर डाल देता है।”

और आप और मैं अपने आप में परिपूर्ण नहीं हैं। हम मसीह में ही परिपूर्ण होते हैं। रोमियों अध्याय 4 पद 25 में लिखा है, “वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।” जिससे कि परमेश्वर के समक्ष खड़े होने के लिए धर्मी ठहरें। 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 पद 21 इसकी व्याख्या है, “जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।” और इस प्रकार आप और मैं धार्मिकता के बागे में खड़े दिखाई देते हैं। इस बागे का वास्तव में एक रोमांचक इतिहास है।

अब चौथी बात जो नाओमी रूत से कहती है वह है कि वह खलिहान में जाकर बोअज़ पर प्रगट करे कि वह उसे अपना कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनाना चाहती है।

: r 3¼ में हम पढ़ते हैं,

“और जब वह लेट जाए, तब तू उस के लेटने के स्थान को देख लेना; फिर भीतर जाकर उसके पाँव उघाड़के लेट जाना; तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना चाहिये।”

मेरे मित्रों, आपके और मेरे लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण चरण है। यह एक ऐसा चरण है जो प्रत्येक पापी को लेना होता है। आज कलीसिया में अनेक जन हैं जिन्होंने मसीह को ग्रहण नहीं किया है। वे कभी खलिहान नहीं गए और मसीह को कुटुम्बी मुक्तिदाता ग्रहण नहीं किया है। मैं पूछना चाहता हूँ, “क्या आपने मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण किया है?” मेरे मित्रों, आपको उसे ग्रहण करना आवश्यक है। धर्मशास्त्र की भाषा में व्यक्त है कि प्रभु यीशु मसीह में या प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर। इस विश्वास को सक्रिय विश्वास होना है, मार्ग के किनारे खड़े सिर हिलाने का विश्वास नहीं। यह एक सक्रिय विश्वास है जो उसे अपना कुटुम्बी मुक्तिदाता बनाता है। वह हमारा मुक्तिदाता है। कैसा अनुपम उपहार! रोमियों अध्याय 6:23 में लिखा है, “परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।”

मूसा की व्यवस्था में रूत को बोअज़ पर कुटुम्बी छुड़ानेहारे का अधिकार ही नहीं है, उसे उस पर दावा करना आवश्यक है। यही नहीं, स्पष्ट है कि बोअज़ उसका कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनना भी चाहता है। ये घटनाएँ जो घट रही हैं वे यीशु के आगमन और बैतलहम में उसके जन्म की सम्भावना उत्पन्न करती हैं। यह युवती अपनी सास की आज्ञा मानेगी और इसमें कोई बुरी

बात भी नहीं है। यह हम आगे चलकर देखेंगे। उसे आदेश दिया गया था कि उस पर दावा करे। उसने उस पर दावा नहीं किया था।

अनेक जन यह तो स्वीकार करते हैं कि यीशु मसीह इस संसार में आया परन्तु वे मसीह को स्वीकार नहीं करते हैं।

वर्षों पूर्व क्रिश्चियन एन्डवर की सभा में प्रवचन सुनाने के पश्चात मैं अपना कोट कंधे पर डालकर सभागार में से जा रहा था तो मैं ने देखा कि कॉलेज के विद्यार्थियों का एक छोटा समूह मेरे पास आ रहा है। उनमें एक पदधारक था जिसने मुझ से कहा, "श्रीमान जी, हम चाहते हैं कि आप इस युवक के साथ बात करें।" मैं ने कहा, "बहुत अच्छा, उसकी पृष्ठभूमि क्या है?" उसने कहा, "यह युवक आज की सभा में आने के लिए तैयार तो हो गया परन्तु हमारी आशा के विपरीत इसने यीशु को ग्रहण नहीं किया है। अतः हम चाहते हैं कि आप इससे बात करें।" अतः मैं ने उससे पूछा, "क्या आप बाइबल में विश्वास करते हैं?" उसने कहा, "जी हाँ।" "मैं विस्मित हुआ। मैं तो सोच रहा था कि वह अन्य कॉलेज विद्यार्थियों के समान विवाद करेगा।" अतः मैं ने पूछा, "क्या आप नूह के युग में जलप्रलय की कहानी पर विश्वास करते हैं। यह बड़ी निर्बुद्धि की बात लगती है परन्तु उसने कहा कि उसे वह निर्बुद्धि की बात नहीं लगती है।" मैंने कहा, "योना और मछली की बात में तो सर्वथा मूर्खता ही दिखाई देती है।" उसने कहा, "मुझे ऐसा नहीं लगता है।" मैं ने कहा, "क्या आप उस पर विश्वास करते हैं?" उसने कहा, "जी हाँ।" मैं तो सोच रहा था कि यह युवक विवाद करेगा जैसा वे प्रायः करते हैं। मैं तैयार भी था। तब मैं ने पूछा, "क्या आप यह भी विश्वास करते हैं कि 2000 वर्ष पूर्व मसीह यीशु इस संसार में आया था? वह परमेश्वर का पुत्र था और कुँवारी से उत्पन्न हुआ था?" उसने कहा, "जी हाँ।" "क्या आप स्वीकार करते हैं कि वह चमत्कार करता था?" "जी हाँ।" "क्या आप यह भी मानते हैं कि वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा?" "जी हाँ।" "क्या आप यह भी मानते हैं कि उसका सदेह पुनरुत्थान हुआ?" "जी हाँ।" "क्या आप यह भी मानते हैं कि वह स्वर्ग में चला गया?" "जी हाँ।" वह तो सब कुछ स्वीकार कर रहा था। ऐसे में क्या किया जाए? व्यक्तिगत प्रचार के अध्ययन में इससे आगे क्या किया जाए मैं ने कक्षा में नहीं सीखा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करूँ कि मेरे मुँह से निकला, "नौजवान क्या आप मसीह यीशु को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता ग्रहण करने को तैयार हैं?" उसने कहा, "जी हाँ, मैं ग्रहण करता हूँ।" यहाँ सच तो यह है कि हम सब उसके साथ बाइबल पर विवाद करने का विचार बनाए हुए थे परन्तु किसी ने उससे यह नहीं कहा था, "खलिहान में जाकर मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करो।" और इस युवक ने बड़ी

अद्भुत रीति से मसीह को ग्रहण किया। हमने उस खाली सभाघर में घुटने टेके और उसने मसीह को ग्रहण किया। आवश्यकता इस बात की थी कि वह खलिहान में जाता। सच तो यह है कि आज ऐसे अनेक जन हैं। सम्भवतः आप उनमें से एक हैं। आप कलीसिया के भी सदस्य हो सकते हैं परन्तु आपने खलिहान में व्यक्तिगत रूप से मसीह को मुक्तिदाता ग्रहण किया है? अपने पापों से छुड़ानेहारा? उस पर विश्वास करके आप जान लेंगे कि अन्धकार से ज्योति में आना क्या होता है।

अब नाओमी रूत से कहती है,

: r 3%4&6 में हम पढ़ते हैं,

"और जब वह लेट जाए, तब तू उस के लेटने के स्थान को देख लेना; फिर भीतर जाकर उसके पाँव उघाड़के लेट जाना; तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना चाहिये।

उसने उससे कहा, "जो कुछ तू कहती है वह सब मैं करूँगी।

तब वह खलिहान को गई और अपनी सास की आज्ञा के अनुसार ही किया।"

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि नाओमी ने रूत से जो कहा उसमें अनुचित कुछ नहीं था। पहली बात तो यह है कि यदि यह अनुचित था तो नाओमी रूत से ऐसा करने को कभी नहीं कहती। तथापि इसके आलोचक हैं जो खलिहान और इस नियम को नहीं जानते हैं। रूत के लिए आवश्यक था कि वह उसे कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनाए। परन्तु खलिहान एक सार्वजनिक स्थान होता था। लवनी करनेवाले वहां अपने अपने परिवार के साथ उपस्थित थे। नाओमी ने रूत से कहा, "जब काम समाप्त हो जाए और सब भोजन कर लें और परमेश्वर की स्तुति का समय—धार्मिक संस्कार पूरा हो जाए तब बोअज़ सोने चला जाएगा। उसका सिर अन्न के ढेर की ओर और उसके पाँव बाहर की ओर होंगे। तू जाकर अपना पाँव उसके पाँव के साथ रखना और उसका बागा अपने पाँवों पर खींचना तब वह बताएगा कि तुझे क्या करना है।" यह सब खुल्लमखुल्ला था अतः यहाँ अनैतिकता का विचार उत्पन्न होना हमारा अज्ञान है। हम नहीं जानते हैं फसल काटने के समय खलिहान का वातावरण कैसा होता था।

: r 3%7&8 में हम पढ़ते हैं,

*“जब बोअज़ खा पी चुका, और उसका मन आनन्दित हुआ,
तब जाकर अनाज के ढेर के एक सिरे पर लेट गया। तब
वह चुपचाप गई, और उसके पाँव उघाड़ के लेट गई।*

*आधी रात को वह पुरुष चौंक पड़ा, और आगे की ओर
झुककर क्या पाया, कि उसके पाँवों के पास कोई स्त्री
लेटी है।”*

उसे ठण्डा लगा तो उसने उठकर देखा कि वहाँ एक स्त्री सो रही है।

: r 3%9 में हम पढ़ते हैं,

*“उसने पूछा, तू कौन है? तब वह बोली, मैं तो तेरी दासी
रुत हूँ; तू अपनी दासी को अपनी चदर ओढ़ा दे, क्योंकि
तू हमारी भूमि छुड़ानेवाला कुटुम्बी है।”*

मेरे अपने विचार में, मित्रों यह परमेश्वर के वचन में हमारे पास सबसे मनभावन घटना है। क्या आप जानते हैं वह क्या कहना चाहती थी? वह कह रही थी, “मैं तुझे अपना कुटुम्बी मुक्तिदाता बनाना चाहती हूँ। यह मेरी अभिव्यक्ति है।” इससे उसके सोच बदल गए। मेरे विचार में वह आसमान से ज़मीन पर गिर गया था परन्तु अब वह प्रसन्न था। सुनिए वह क्या कहता है,

: r 3%10 में हम पढ़ते हैं,

*“उसने कहा, हे बेटी, यहोवा की ओर से तुझ पर आशीष
हो; क्योंकि तू ने अपनी पिछली प्रीति पहली से अधिक
दिखाई, क्योंकि तू क्या धनी क्या कंगाल, किसी जवान के
पीछे नहीं लगी।”*

दूसरे शब्दों में उसके कहने का अर्थ था, “जब तुम आई थीं तब तुम्हारे मन में पति खोजने का विचार नहीं था, यह तो स्पष्ट है।” उस समय तो वह बड़ी शान्त और दूर-दूर थी परन्तु अब वह बोअज़ को कुटुम्बी छुड़ानेहारा बना रही थी और विश्वास कीजिए कि वह भी पीछे नहीं हट रहा था। वह कैसी सौम्य रीति से कर रही थी। वह चाहती तो उसे मूसा की व्यवस्था

के अनुसार वृद्धों की सभा में प्रस्तुत करके खुलकर कह सकती थी, “मैं तुम्हें मेरा कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनाना चाहती हूँ।” जो एक वैधानिक विषय बनता परन्तु नाओमी ने ऐसा करने का सुझाव दिया। उसने कहा कि, “बोअज़ के विषय तो वैधानिकता का प्रश्न नहीं उठता है क्योंकि वह तो स्वयं तुम्हारा कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनना चाहता है। तुम्हें बस उस पर प्रगट करना है कि तुम उससे यह चाहती हो।” अतः वह खलिहान जाती है और इस शान्त, सभ्य रीति से उस पर प्रगट करती है कि वह बोअज़ को अपना कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनाना चाहती है। बोअज़ उसे पत्नी बनाने के लिए तुरन्त तैयार हो जाता है। वह तो इसी की प्रतीक्षा में था। वह तुरन्त गतिविधि आरम्भ करता है क्योंकि अब रास्ता साफ है और आगे बढ़ने से उसे रोकनेवाला कोई नहीं। रूत ने उसे अपना लिया है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमारे पास एक उद्धारकर्ता है और उसके साथ हमारा सम्बन्ध प्रेम का है। उसने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए अपनी जान दे दी कि हमें छुड़ा ले। यह कैसा अद्भुत अनुभव है कि हमारा उद्धारकर्ता हमारे लिए मर गया, वह हमसे प्रेम करता है और हमारे लिए जीवित है। अब ध्यान दीजिए, बोअज़ क्या कहता है,

: r 3॥11 में हम पढ़ते हैं,

***“इसलिये अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी मैं
तुझ से करूँगा; क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं
कि तू भली स्त्री है।”***

मैं चाहता हूँ कि आप इस परदेशी युवती के सम्मान को देखें जो सामान्य परिस्थितियों में बैतलहम के समाज में जाति-बाहर मानी जाती क्योंकि मूसा की व्यवस्था के अनुसार मोआबियों को जाति-बाहर रखा जाता था। उसे बता दिया गया था मोआबी और अम्मोनी परमेश्वर की प्रजा में प्रवेशयोग्य नहीं थे। नाओमी ने बैतलहम आने से पूर्व ही उसे समझा दिया था कि वहाँ उसके पुनर्विवाह की सम्भावना नहीं थी परन्तु रूत ने अपना विधवा रहना स्वीकार करके नाओमी के साथ आना चाहा था। मेरे विचार में नगर की चर्चा ने उसे बड़े ध्यान से उसका आरम्भिक निरीक्षण किया होगा। मैं नहीं जानता कि उसके बारे में क्या क्या कहा गया होगा परन्तु यह तो निश्चित है कि अन्ततः उन्होंने कहा होगा, “नाओमी की बहू सच में अति सुशील है। वह निश्चय ही हमारे युवकों में से एक को फंसाना चाहती है।” परन्तु रूत ने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके विपरीत उसने बैतलहम में सम्मान अर्जित किया।